Lecture Series No-90
31/7/20

B.A(H) Part-1, Paper-1 Dr. Suman Kumar Poddar

Topic :- Modern Theory of Interest
(iv) ब्याज का आधुनिक सिद्धांत

ब्याज की दर के निर्धारण का आधुनिक सिद्धांत अथवा नव- कीन्स प्रेरित (Neo-Keynesian) सिद्धांत, प्रतिष्ठित सिद्धांत तथा कीन्स के सिद्धांतों का समन्वय है। प्रो० हिक्स एवं प्रो० लर्नर जैसे अर्थशास्त्रियों ने इन सिद्धांतो (प्रतिष्ठित व कीन्स के सिद्धांत) से कुछ महत्वपूर्ण अंशो को लेकर उन्हे एक नवीन सिद्धांत में संयोजित कर दिया है। इसे ब्याज का निर्धारण सिद्धांत (Determinate Theory of Interest) भी कहते हैं।

आधुनिक सिद्धांत ब्याज दर निर्धारण की समस्या का अध्ययन मौद्रिक तथा अमौद्रिक (अथवा वास्तविक) तत्वों के सन्तुलन के अध्ययन में सम्मिलित करके करता है। प्रतिष्ठित सिद्धांत का कहना है कि ब्याज की दर वहाँ निश्चित होती है जहाँ बचत तथा विनियोग की मात्रा बराबर होती है अर्थात प्रतिष्ठित सिद्धांत ने ब्याज दर के निर्धारण की व्याख्या प्रस्तुत करते समय केवल वास्तविक तत्वों (अर्थात वास्तविक बचत एवं वास्तविक विनियोग) को ही महत्व दिया था। इसके विपरीत, कीन्स के सिद्धांत के अनुसार ब्याज की दर मुद्रा की माँग (अथवा तरलता पसन्दगी) तथा मुद्रा की प्रदायी (अथवा मुद्रा की मात्रा) द्वारा निर्धारित होती है अर्थात कीन्स के सिद्धांत में केवल मौद्रिक तत्वों (अर्थात मुद्रा की माँग व मुद्रा की पूर्ति) को ही महत्व प्रदान किया गया था। परन्तु आधुनिक सिद्धांत ने मौद्रिक तथा गैर-मौद्रिक तत्वों को संयोजित करके ब्याज-दर के निर्धारण की व्याख्या प्रस्तुत की है। अतः आधुनिक सिद्धांत तथा ब्याज के प्रतिष्ठित सिद्धांत और कीन्सियन दोनो का ही सम्मिश्रण है। प्रतिष्ठित सिद्धांत तथा कीन्स के तरलता पसन्दगी सिद्धांत का समन्वय करने से हमे चार तत्व प्राप्त होते हैं:

(i) विनियोग माँग वक्र या विनियोग फलन (Investment Function),
(ii) बचत रेखा या बचत फलन (Saving Function),
(iii) तरलता पसन्दगी रेखा या तरलता पसन्दगी फलन (Liquidity Preference Function),
(iv) मुद्रा की मात्रा या पूर्ति (Quantity and Supply of Money)

उपर्युक्त चार तत्वों के आधार पर हमें दो प्रकार के वक्र प्राप्त होते हैं :—

(i) विनियोग बचत वक्र (IS curve) :- प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों की विनियोग एवं बचत की समानता के आधार विनियोग बचत वक्र प्राप्त होता है। विनियोग बचत वक्र ब्याज और आय के ऐसे संयोगों को बताता है जहाँ बचत वक्र प्राप्त होता है। विनियोग बचत वक्र ब्याज और आय के ऐसे संयोगों को बताता है जहाँ बचत और विनियोग आपस में बराबर होते हैं।